नातों का हसीन मजमुआ

# निकहते गुल

उबैदे ग़ौसो ख़्वाजः रज़ा व कुल औलिया
मुहम्मद जमालुद्दीन ख़ान क़ादिरी रज़वी
ज़िलअ़ बहराइच शरीफ़ यूपी, अल-हिन्द
मोबाइल नम्बर +917860520899



रज़वी किताब घर
423, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

मुल्क व बैरूने मुल्क के मशहूर व मायानाज़
शोअ़राए किराम के सदाए दिल का मजमूआ

# नकहते गुल

उबैदे गौसो ख़्वाजः रज़ा व कुल औलिया
मुहम्मद जमालुद्दीन खान क़ादिरी रज़वी
ज़िलअ़ बहराइच शरीफ़ यूपी, अल-हिन्द
मोबाइल नम्बर +917860520899

मुरत्तेबा

मौलाना मुहम्मद मक़सूद आलम रज़वी

ब-एहतेमाम

हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

रज़वी किताब घर

423, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

*Camposed by :* Razavi Computer Point, Delhi-6 Ph. 3264524

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# कहां क्या है



https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

## रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट

रज़वी किताब घर ने रज़वी कम्प्यूटर प्वाइन्ट के नाम से एक अलाहिदा सेक्शन क़ाइम किया है जिसके ज़रीआ़ उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी ज़बानों में जॉब वर्क के साथ साथ किताब की कम्पोज़िंग का काम निहायत तेज़ी के साथ हो जाता है और ख़ास तौर से उर्दू किताबत inpage जैसे उम्दा साफ़्ट वेयर से की जाती है। इसलिए ज़रूरतमन्द हज़रात अपने इत्मीनान बख़्श काम के लिए हम से राबेता क़ाइम करें।

**रज़वी किताब घर**

423, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली–6


https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# आग़ाज़े सुख़न

अल्हम्दुलिल्लाह! गुलदस्तए नअ़त 'मौजे नूर' मुल्क के नामवर और मायानाज़ शोअ़राए किराम के नअ़त व मनाक़िब का रूह परवर और दिलनवाज़ मजमूअ़ए कलाम कई बार शाया होकर अरबाबे ज़ौक़ से ख़राजे अ़क़ीदत और दादे तहसीन व आफ़रीन हासिल कर चुका है। मौजे नूर की पज़ीराई ने हौसला अफ़ज़ाई की और यह दूसरा मजमूअ़ए कलाम 'नकहते गुल' की सूरत में पेश करने की जसारत हुई।

मैं उम्मीद करता हूं कि 'नकहते गुल' अहले ज़ौक़ को ज़रूर मसहूर करेगा।

गर क़बूल उफ़्तद ज़हे इज़्ज़ो शरफ़

**पेशकर्दा**

**मुहम्मद मक़सूद आलम रज़वी सीवानी**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# तुझे हम्द है ख़ुदाया

## इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी

वही रब है जिसने तुझको हमा तन करम बनाया
हमें भीक मांगने को तेरा आस्तां बताया तुझे हम्द है ख़ुदाया

तुम्हीं हाकिमे बराया तुम्हीं क़ासिमे अ़ताया
तुम्हीं दाफ़ेअ़े बलाया तुम्हीं शाफ़ेअ़े ख़ताया कोई तुमसा कौन आया

वो कुंवारी पाक मरयम वह नफ़ख़्तो फ़ीह् का दम
है अ़जब निशाने आज़म मगर आमेना का जाया वही सबसे अफ़्ज़ल आया

यही बोले सिद्‌रा वाले चमने जहां के थाले
सभी मैंने छान डाले तेरे पाये का न पाया तुझे यक ने यक बनाया

अरे ऐ ख़ुदा के बन्दो! कोई मेरे दिल को ढूंढो
मेरे पास था अभी तो अभी क्या हुआ ख़ुदाया न कोई गया न आया

हमें ऐ **रज़ा** तेरे दिल का पता चला बमुश्किल
दरे रौज़ा के मुक़ाबिल वो हमें नज़र तो आया ये न पूछ कैसा पाया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# हमारा नबी

सब से औला व आला हमारा नबी — सबसे बाला व वाला हमारा नबी
अपने मौला का प्यारा हमारा नबी — दोनों आलम का दूल्हा हमारा नबी
बज़्मे आख़िर का शमअ़ फ़रोज़ाँ हुआ — नूरे अव्वल का जल्वा हमारा नबी
बुझ गईं जिस के आगे सभी मशअ़लें — शम्मअ़ वो लेकर आया हमारा नबी
जिसके तल्वों का धोवन है आबे ह़यात — है वो जाने मसीहा हमारा नबी
ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल — और रसूलों से आला हमारा नबी
जैसे सब का ख़ुदा एक है वैसे ही — इनका उनका तुम्हारा हमारा नबी
कौन देता है देने को मुंह चाहिए — देने वाला है सच्चा हमारा नबी
सारे अच्छों में अच्छा समझिये जिसे — है उस अच्छे से अच्छा हमारा नबी
सारे ऊँचों में ऊँचा समझिये जिसे — है उस ऊँचे से ऊँचा हमारा नबी
सब चमक वाले उजलों में चमका किये — अन्धे शीशों में चमका हमारा नबी
जिसने मुर्दा दिलों को दी उम्रे अबद — है वो जाने मसीह़ा हमारा नबी

ग़मज़दों को रज़ा मुज़्दा दीजे कि है
बेकसों का सहारा हमारा नबी

*(सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)*

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# मेरा दिल भी चमका दे

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमकादे चमकाने वाले

बरसता नहीं देख कर अबरे रहमत बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले
मदीने के ख़ित्ते ख़ुदा तुझ को रक्खे ग़रीबों फ़क़ीरों के ठहराने वाले
तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले
मैं मुजरिम हूं आक़ा मुझे साथ ले लो कि रस्ते में हैं जा बजा थाने वाले
हरम की ज़मीं और क़दम रख के चलना अरे सर का मौक़ा है ओ जाने वाले
तेरा खायें तेरे ग़ुलामों से उलझें हैं मुन्किर अजब खाने ग़ुर्राने वाले
रहेगा यूं ही उन का चरचा रहेगा पड़े ख़ाक होजायें जल जाने वाले

**रज़ा** नफ़स दुश्मन है दम में न आना
कहाँ तुमने देखे हैं चन्दराने वाले

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# शमअ़े रिसालत

तू शमअ़े रिसालत है आलम तेरा परवाना
तू माहे नबुव्वत है ऐ जलवए जानाना
जो साक़ीए कौसर के चेहरे से निक़ाब उट्ठे
हर दिल बने मैख़ाना हर आंख हो पैमाना
दिल अपना चमक उट्ठे ईमान की तलअ़त से
कर आंख भी नूरानी ऐ जलवए जाना ना
सरशार मुझे कर दे इक जामे लबालब से
ता हश्र रहे साक़ी आबाद यह मैख़ाना
हर फूल में बू तेरी हर शमअ़ में ज़ौ तेरी
बुलबुल है तेरा बुलबुल परवाना है परवाना
पीते हैं तेरे दर का, खाते हैं तेरे दर का
पानी है तेरा पानी दाना है तेरा दाना
हर आरज़ू बर आये सब हसरतें हों पूरी
वोह कान ज़रा धर कर सुनलें मेरा अफ़साना
संगे दरे जानां पे करता हूं जबीं सायी
सज्दा न समझ नजदी सर देता हूं नज़राना

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

गिर पड़के यहां पहुंचा मर मरके इसे पाया
छूटे न इलाही अब संगे दरे जानाना
आबाद इसे फ़रमा वीरां है दिले नूरी
जलवे तेरे बस जायें आबाद हो वीराना

## नअ़्त शरीफ़

**आ़बिद बरैलवी**

नूरे अहमद हुआ आश्कारा रहमतों के कंवल मुस्कराये
बन गया रश्के फ़िरदौस तैबा जब नबी मेरे तशरीफ़ लाये
या ख़ुदा आरज़ू है ये मेरी मौत आये तो यूं मुझको आये
मेरे लब पे हो नामे मुहम्मद जान जब भी मेरे तन से जाये
ख़ुल्क़ मेरे नबी का न पूछो दुश्मनों से भी यूं पेश आये
लाख सदमे सहे मुस्तफ़ा ने फिर भी दस्ते दुआ ही उठाये
इश्क़ उस पेड़ का कोई देखे जिसके साये में सरकार बैठे
हद तो यह है कि उस पेड़ ने भी उनकी फ़ुरक़त में आंसू बहाये
मैं भी हसरत लिए फिर रहा हूं उनके दीदार की दिल में आ़बिद
एक दिन मुझको भी मेरी क़िस्मत काश आक़ा का रौज़ा दिखाये

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# निगाहे करम

जलील नक़वी

मेरी जानिब भी हो एक निगाहे करम
ऐ शफ़ीउल्वरा ख़ातमुलअम्बिया
आप नूरे अज़ल आप शमअ़े हरम
आप शम्सुज़्ज़ुहा ख़ातमुलअम्बिया

ऐ जमीलुश्शियम ऐ इमामुलउमम
आप हैं साहबे जूदो अब्रे करम
हस्तीए मुहतशिम क़िबलए मुहतरम
ऐ रसूले ख़ुदा ख़ातमुलअम्बिया

आप हैं हक़ निगर आप हैं हक़ रसाँ
सिदरतुलमुन्तहा आपके ज़ेरे पा
आप हैं मज़हरे ज़ाते रब्बुल उला
रहबरे हक़ नुमा ख़ातमुलअम्बिया

आप फ़ख़्रे अ़जम आप शाने अ़रब
आप फ़ज़्ले उमम आप रहमत लक़ब
सरवरे ज़ी हशम शाहे वाला नसब
मुर्तज़ा मुजतबा ख़ातमुलअम्बिया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

आप हैं वजहे तख़्लीक़े कौनो मकाँ
आपके दम से हैं यह ज़मीनो ज़माँ
आप हैं बे निशानी का बय्यइन निशाँ
ऐ शहे दोसरा ख़ातमुलअम्बिया
ऐ फ़सीहुलबयाँ ऐ बलीगुल्लिसाँ
ऐ वहीदुज़्ज़माँ मा वराए गुमाँ
आपका नूर है अज़ करॉं ता कराँ
शाहिदे किब्रिया ख़ातमुलअम्बिया
मुर्सले मुर्सलाँ सरवरे अ़रशियाँ
हादीए इन्सो जाँ मुक़बले मुक़बलाँ
आपकी ज़ात है बाइसे कुन फ़काँ
राज़े अर्ज़ो समा ख़ातमुलअम्बिया

## नअ़्ते अक़दस

**बहज़ाद लखनवी**

मदीने को जायें यह जी चाहता है
मुक़द्दर बनायें यह जी चाहता है
मदीने के आक़ा दो आलम के मौला
तेरे पास आयें यह जी चाहता है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

जहां दोनों आलम हैं महवे तमन्ना
वहां सर झुकायें यह जी चाहता है
मुहम्मद की बातें मुहम्मद की सीरत
सुनें और सुनायें यह जी चाहता है
पहुंच जायें बहज़ाद जब हम मदीने
तो ख़ुद को न पायें यह जी चाहता है

## यादे आक़ा

**हाशिम**

याद में आक़ा के आंसू बह गये
सब मदीने को गये हम रहे गये
हम मदीने जायेंगे अबके बरस
हर बरस यह सोच कर हम रह गये
हम तेरा आक़ा से कह देंगे सलाम
जाने वाले लोग हम से कह गये
करते हैं सब पे करम शाहे उमम
आने वाले लोग हम से कह गये
कैसे हाशिम को भला आये क़रार
क़ाफ़िला बिछड़ा अकेले रह गये

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# नअ़्ते रसूल

**बेदम वारसी**

क़िबला व कअ़्बए ईमान रसूले अ़रबी
दोजहां आप पे क़ुरबान रसूले अ़रबी
चांद हो तुम तो रसूलाने सलफ़ तारे हैं
सब नबी दिल हैं तो तुम जान रसूले अ़रबी
सदक़ा हसनैन का रौज़ा पे बुलालो मुझको
हिन्द में हूं मैं परेशान रसूले अ़रबी
कोई बेहतर है तो बेहतर से भी बेहतर तू है
सब से आला है तेरी शान रसूले अ़रबी
तेरा दीदार है दीदारे इलाही मुझको
तेरी उल्फ़त मेरा ईमान रसूले अ़रबी
मजमए हश्र में इस शान से आये **बेदम**
हाथ में हो तेरा दामान रसूले अ़रबी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# मुझे ले चलो मदीना

**इक़बाल**

मेरा दिल तड़प रहा है मेरा जल रहा है सीना
कि दवा वहीं मिलेगी मुझे ले चलो मदीना
दीदारे मुस्तफ़ा को आंखें तरस रही हैं
दुश्वार हो गया है उनके बग़ैर जीना
तस्वीरे मुस्तफ़ा जो नज़र आ रही है दिल में
मैं यह सोचता हूं दिल में मेरा दिल है या मदीना
शबो रोज़ बढ़ रहा है मेरी तिशनगी का आलम
यह प्यास कब बुझेगी मेरे साक़ीए मदीना
नहीं मालो ज़र तो क्या है मैं ग़रीब हूं यही ना
मेरे इश्क़ तू ही ले चल मुझे जानिबे मदीना
मुझे गर्दिशो न छेड़ो मेरा है कोई जहां में
मैं अभी पुकार लूंगा नहीं दूर है मदीना
इक़बाल नातवाँ की बस एक इल्तेजा है
रहे ज़िन्दगी सलामत मैं भी देख लूं मदीना

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# मुझे आपने बुलाया

**अन्जुम**

मुझे आपने बुलाया यह करम नहीं तो क्या है
मेरा मर्तबा बढ़ाया यह करम नहीं तो क्या है
मैं ग़मों की धूप में जब तेरा नाम लेके निकला
मिला रहमतों का साया यह करम नहीं तो क्या है
मुझे जब भी ग़म ने घेरा मेरा साथ सब ने छोड़ा
तू मेरी मदद को आया यह करम नहीं तो क्या है
मैं भटक के रह गया था कहीं और बह गया था
मुझे रास्ता दिखाया यह करम नहीं तो क्या है
यह शरफ़ बड़ा शरफ़ है तेरा रुख़ मेरी तरफ़ है
मुझे नअ़तख़्वाँ बनाया यह करम नहीं तो क्या है
मुझे हौसला वह बख़्शा तेरे क़ुर्ब के यक़ीं ने
मैं ग़मों में मुस्कुराया यह करम नहीं तो क्या है
दरे मुस्तफ़ा से अन्जुम मैं ख़ुद आ गया मेरा दिल
कभी लौट कर न आया यह करम नहीं तो क्या है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# कैसा लगेगा

मैं नज़र करूं जानो जिगर कैसा लगेगा
रख दूं दरे सरकार पे सर कैसा लगेगा
आजायें मुक़द्दर से शहे दीं जो मेरे घर
मैं कैसा लगूंगा मेरा घर कैसा लगेगा
जब दूर से है इतना हसीं गुम्बदे ख़ज़रा
इस पार है ऐसा तो उधर कैसा लगेगा
ग़ौसुलवरा से पूछ लें इक रोज़ यह चल कर
बग़दाद से तैबा का सफ़र कैसा लगेगा
महशर की तमाज़त में वह क़ुदरत के फ़रिश्ते
तोड़ेंगे जो नज्दी की कमर कैसा लगेगा
आजायें तड़प कर अगर वह शेरे बरैली
रोबाह में वह शेरे बबर कैसा लगेगा

## क़तअ़

यह इस्लाम सीना बसीना न होता
ख़ुदाई का ऐसा क़रीना न होता
ज़मीं आसमाँ चाँद सूरज सितारे
मुहम्मद न होते तो कुछ भी न होता

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

## हय्-य अलस्सलाह हय्-य अलस्सलाह

दी हज़रत बिलाल ने कअ्बे से जब सदा
*हय्-य अलस्सलाह हय्-य अलस्सलाह*
इरशादे किब्रिया है यह फ़रमाने मुस्तफ़ा
*हय्-य अलस्सलाह हय्-य अलस्सलाह*

पैदा हुए रसूल तो रहमत बरस पड़ी
थी आसमां से फ़र्श तलक नूर की झड़ी
दाई हलीमा गोद में लेकर जो चल पड़ीं
बीमार ऊँटनी में अजब जान पड़ गई
बादे सबा ने झूम के कानों में यूं कहा
*हय्-य अलस्सलाह हय्-य अलस्सलाह*

अर्शे बरीं पे रब ने बुलाया हुज़ूर को
जिब्रील आये और जगाया हुज़ूर को
हक़ की रज़ा का जाम पिलाया हुज़ूर को
चलने लगे तो रब ने बताया हुज़ूर को
उम्मत से जा के कहना यही तोहफ़ा है मिला
*हय्-य अलस्सलाह हय्-य अलस्सलाह*

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

इस्लाम के अ़लम को उठाया हुसैन ने
बातिल के आगे सर न झुकाया हुसैन ने
क्या चीज़ है नमाज़ बताया हुसैन ने
सज्दे में अपने सर को कटाया हुसैन ने
यह दश्ते करबला से अभी आती है सदा
*हय्–य अ़लस्सलाह हय्–य अ़लस्सलाह*

दाढ़ी तमाम नबियों की सुन्नत है मोमिनो!
इस्लाम का शेआ़र है रहमत है मोमिनो!
सरकार की ग़ुलामी की निस्बत है मोमिनो!
सुन्नत पे जो चला उसे जन्नत है मोमिनो!
जन्नत में भी मिलेगा तुम्हें क़ुर्बे मुस्तफ़ा
*हय्–य अ़लस्सलाह हय्–य अ़लस्सलाह*

मेअ़राजे रूहे अहले बसीरत नमाज़ है
अफ़ज़ल तरीन शुग़ले सआ़दत नमाज़ है
मेरे नबी की आंखों की ठंडक नमाज़ है
मोमिन के वास्ते तो अ़लामत नमाज़ है
यह है हकीम मज़हरे अल्ताफ़े किब्रिया
*हय्–य अ़लस्सलाह हय्–य अ़लस्सलाह*

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# मचल मचल के

**हैदर परवाज़, कलकत्ता**

दीवारो दर के बोसे लूंगा मचल मचल के
देखूंगा उनका रौज़ा आंखें मसल मसल के
तैबा से दूर रह कर गर दफ़न हो गया मैं
पहुंचेगा मेरा लाशा करवट बदल बदल के
तौहीने मुस्तफ़ा से तौबा तू कर ले वरना
निकलेगी तेरी चरबी नज्दी पिघल पिघल के
अर्शे बरीं से गुज़रे महबूबे किब्रिया जब
आईं सलामी देने हूरें निकल निकल के
पढ़ता है नअ़ते अहमद परवाज़ झूम कर जब
देती है दाद महफ़िल उसको उछल उछल के

## क़तअ़

क़सम ख़ुदा की वह मंज़र अ़जीब होता है
नज़र से जब कि मदीना क़रीब होता है
हयाते रौज़ए अक़दस का उनके क्या कहना
जो देख आता है वह ख़ुश नसीब होता है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# करम धीरे धीरे

**हैदर परवाज़ कलकत्ता**

करेंगे नबी जो करम धीरे धीरे
तो मिट जायेंगे सारे ग़म धीरे धीरे
यह सुल्ताने दीं की मुक़द्दस ज़मीं है
यहां रख के चलना क़दम धीरे धीरे
पढूं नअ़त शाहे ज़मन धीरे धीरे
निखर जायेंगे फ़िक्रो फ़न धीरे धीरे
ग़ुलामे नबी गोर में सो रहा है
फ़रिश्ते हटायें कफ़न धीरे धीरे
सरे अ़र्श हर नअ़त ख़्वाने नबी का
धुलायेंगी हूरें दहन धीरे धीरे
सुनायेंगे परवाज़ नअ़ते शहे दीं
अ़क़ीदत में होके मगन धीरे धीरे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# मुझे तुम न भूल जाना

**अ़त्तार**

मुझे दर पे फिर बुलाना मदनी मदीने वाले
मए इश्क़ फिर पिलाना मदनी मदीने वाले
तेरी जबकि दीद होगी वही मेरी ईद होगी
मेरे ख़्वाब में तुम आना मदनी मदीने वाले
मुझे सब सता रहे हैं मेरा दिल दुखा रहे हैं
तुम्हीं हौसला बढ़ाना मदनी मदीने वाले
यह करम बड़ा करम है तेरे हाथ में भरम है
सरे हश्र बख़्शवाना मदनी मदीने वाले
शहा ऐसा जज़्बा पाऊँ कि ख़ूब सीख जाऊँ
तेरी सुन्नतें सिखाना मदनी मदीने वाले
तेरी सुन्नतों पे चलकर मेरी रूह जब निकलकर
चले तुम गले लगाना मदनी मदीने वाले
मेरे वालिदैन महशर में गो भूल जायें सरवर
मुझे तुम न भूल जाना मदनी मदीने वाले
मेरी आ़दतें हों बेहतर बनूं सुन्नतों को पैकर
मुझे मुत्तक़ी बनाना मदनी मदीने वाले

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

मेरे ग़ौस का वसीला रहे शाद सब क़बीला
उन्हें ख़ुल्द में बसाना मदनी मदीने वाले
मेरी आने वाली नसलें तेरे इश्क़ में ही मचलें
उन्हें नेक तुम बनाना मदनी मदीने वाले
तेरे ग़म में काश अत्तार रहे हर घड़ी गिरिफ़्तार
ग़मे माल से बचाना मदनी मदीने वाले

# बहुत दिन हुए

**अजमल**

आज तक उनकी आमद का है तज़्किरा उनको तशरीफ़ लाये बहुत दिन हुए
मेरा सीना मदीना है सरकार का इसको जन्नत बनाये बहुत दिन हुए
आज से पौने चौदह सदी पेश्तर थे जहां तुम चलो फिर वहीं लौट कर
कब तक आंसू बहाओगे ऐ मोमिनो तुम को तो मुस्कुराए बहुत दिन हुए
जाने कब हो मुक़द्दर मेरा औज पर जाने कब देखूं तैबा की शामो सहर
जाने कब हो मदीना में मेरा गुज़र दिल में अरमाँ बसाये बहुत दिन हुए
छेड़ो अजमल ज़रा नग़मए नौ कोई गुनगुनाये फ़ज़ा झूम उठे ज़िन्दगी
कह रहे हैं यही अहले महफ़िल सभी तुम को नअ़तें सुनाये बहुत दिन हुए

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# दामने मुस्तफ़ा फ़क़त

**सय्यद नज़मी मियाँ**

कअ़बा के दर के सामने मांगी है यह दुआ फ़क़त
हाथों में हश्र तक रहे दामने मुस्तफ़ा फ़क़त
अपने करम से ऐ ख़ुदा इश्क़े रसूल कर अ़ता
आख़िरी दम ज़बाँ पे हो सल्ले अ़ला सदा फ़क़त
तैबा की सैर को चलें क़दमों में उनकी जान दें
दफ़न हों उनके शहर में है यही इल्तेजा फ़क़त
दुनिया की सारी निअ़मतें मेरी नज़र में हेच हैं
रखने को सर पे गर मिले नअ़लैने मुस्तफ़ा फ़क़त
मुन्कर नकीर क़ब्र में हम से सवाल जब करें
ऐसे में विर्द हम रखें आपके नाम का फ़क़त
नज़अ़ के वक़्त जब मेरी सांसों में इन्तेशार हो
मेरी नज़र के सामने गुम्बद हो वो हरा फ़क़त
नअ़ते रसूले पाक है नज़मी का मक़्सदे हयात
क़ब्र में भी लबों पे हो सरकार की सना फ़क़त

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# तस्वीरे यार

सय्यद नज़मी मियाँ

बसी है जब से वो तस्वीरे यार आंखों में
सिमट सी आई है फ़स्ले बहार आंखों में
ज़मीने तैबा की मिट्टी बने मेरा सुर्मा
रहे हमेशा नबी का दयार आंखों में
मेरी निगाहें सरे अर्श जा के ठहरेंगी
मलूं जो नअ्ले नबी बार बार आंखों में
वह लामकाँ के मुसाफ़िर बने शबे असरा
खुदा के जलवे समाये हज़ार आंखों में
ऐ हाजियो ज़रा रुकना मैं चूम लूं तुम को
तुम्हारे कदमों का मल लूं ग़ुबार आंखों में
तेरे कलम को रज़ा की रज़ा मिली नज़मी
तभी ज़बाँ में असर है निखार आंखों में

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# ख़ुश्बू

**सय्यद नज़मी मियाँ**

ऐ सबा लेके तू आ उनके बदन की ख़ुश्बू
मैं भी सूंघूं ज़रा जन्नत के चमन की ख़ुश्बू
यूं तो है हिन्द वतन मेरा कई पुश्तों से
तैबा से आती है रूहानी वतन की ख़ुश्बू
यूं तो .कुरआन है अल्लाह तआ़ला का कलाम
उससे आती है किसी मुश्के दहन की ख़ुश्बू
जिस चटाई ने तने पाक पे छोड़े हैं निशाँ
उस चटाई को मिली मुश्के ख़तन की ख़ुश्बू
जिसपर इक बार रखा आक़ा ने दस्ते शफ़क़त
मरते दम तक न गई उसके बदन की ख़ुश्बू
आप से दूर रहूं यह मुझे मन्ज़ूर नहीं
या नबी अब तो सुंघा दीजे मिलन की ख़ुश्बू
नकहते फ़ातिमा ज़हरा से मुअ़त्तर है जहां
दूर तक फैली हुसैन और हसन की ख़ुश्बू
नज़मी साहब ने चुनी है बड़ी संगलाख़ ज़मीं
फिर भी हर शेअ़्र में है नअ़्त के फ़न की ख़ुश्बू

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# आरज़ूए रसूल

**बेदम वारसी**

अ़दम से लाई है हस्ती में आरज़ूए रसूल
कहां कहां लिये फिरती है जुस्तजूए रसूल

बलायें लूं तेरी ऐ जज़्बए शौक़ सल्ले अ़ला
कि आज दामने दिल खिंच रहा है कूए रसूल

तलाशे नक़्श कफ़े पाए मुस्तफ़ा की क़सम
चुने हैं आंखों से ज़र्राते ख़ाके कूए रसूल

फिर उनके नशाए इरफ़ां का पूछना क्या है
जो पी चुके हैं अज़ल में मए सुबूए रसूल

अ़जब तमाशा हो मैदाने हश्र में बेदम
कि सब हों पेशे ख़ुदा और मैं रू बरूए रसूल

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# परवाने कहां जायें

शम्स

तेरी महफ़िल से उठ कर तेरे दीवाने कहां जायें
नबुव्वत की शमा से दूर परवाने कहां जायें
खज़ाने दीनो ईमाँ आज हम लाने कहां जायें
तेरे दर के भिकारी हाथ फैलाने कहां जायें

बहुत रुसवा हुए हैं दहर में ऐ रहमते आलम
तुम्हें अब छोड़ कर हम ठोकरें खाने कहां जायें
बजुज़ हज़रत के अब कोई नहीं फ़रियाद रस मेरा
सुनाने के लिए हम ग़म के अफ़साने कहां जायें

जिसे देखा है तूने इक नज़र ऐ साक़ीए कौसर
वह मतवाले कहां जायें वह मस्ताने कहां जायें
तुम ही हाजत रवा हो जब हमारे या रसूलल्लाह
किसी के आगे दामन अपना फैलाने कहां जायें

मदीने की ये गलियां बस गई हैं शम्स के दिल में
कहां जायें हम अपने दिल को बहलाने कहां जायें

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# क्या कहिये

**सय्यद नज़मी मियाँ**

अल्फ़ाज़ नहीं मिलते सरकार को क्या कहिये
जिब्रील सलामी दें दरबार को क्या कहिये
अख़्लाक़े मुहम्मद की क्या शान निराली है
दुश्मन भी पढ़े कलिमा किरदार को क्या कहिये

ऐ तूर तुझे शायद यह बात न भूली हो
इसरार को क्या कहिये इन्कार को क्या कहिये
बस एक पलक झपकी मेअ्राज हुई पूरी
उस साहबे रिफ़अ़त की रफ़्तार को क्या कहिये

वह ग़ार कि जिसने इक तारीख़ बनाई है
उस ग़ार को क्या कहिये उस यार को क्या कहिये
इक एक सहाबी पर फ़िरदौस भी नाज़ाँ है
सिद्दीक़ो उमर उसमाँ कर्रार को क्या कहिये

नज़मी तेरी नअ्तों का अन्दाज़ निराला है
मज़मून अनोखे हैं अशआ़र को क्या कहिये

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# नग़मए क़ादरियत

**सय्यद नज़मी मियाँ**

ज़रा छेड़ तो नग़मए क़ादरियत कि हर तार बोले तन तन तनातन
तेरी रूह हरगिज़ रहेगी न रक़्सां जो गर्दिश में रहती है गन गन गनागन
अबू जहल हाथों में कंकरियां लाया तो सरकार ने उनको कलिमा पढ़ाया
मगर फिर भी ईमाँ वह नारी न लाया पलट कर वह भागा था दन दन दनादन
चले अर्श की सैर को मेरे आक़ा तो जन्नत से बुराक़ ख़िदमत में आया
हवाओं से गुज़रे फ़ज़ाओं से गुज़रे चले जा रहे थे वह सन सन सनासन
गुलामे शहन्शाहे बग़दाद मैं हूं मेरा दोहरा रिश्ता है ख़्वाजा पिया से
गले में मेरे चिश्ती पट्टा पड़ा है मैं हूं क़ादरी चिश्ती टन टन टनाटन
गुलामे शहन्शाहे बरकात मैं हूं मेरा दोहरा रिश्ता है अच्छे मियाँ से
गले में मेरे नूरी पट्टा पड़ा है मैं हूं क़ादरी सुन्नी टन टन टनाटन
यह है नूरी टिक्साल नूरी मियां की यहां जन्नती सिक्के ढलते रहे हैं
यहां खोटे सिक्के की जा ही नहीं है हर इक सिक्का बजता है खन खन खनाखन
ज़बां पर मेरे नाम नूरी का आया तो नूरानियत ने गले से लगाया
गले में पड़ी थी जो ज़न्जीरे इस्याँ गिरी टूट कर बोली झन झन झनाझन
तुझे नज़मी शैतान का ख़ौफ़ क्यों हो तुझे पीर सय्यद मियां से मिले हैं
करेंगे करम की नज़र तेरे ऊपर तो शैतान भागेगा दन दन दनादन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# अच्छी लगी

**ग़ुलाम रब्बानी नश्तर**

गुमरही अच्छी लगी न ख़ुदरवी अच्छी लगी
नक़्श पाए मुस्तफ़ा की पैरवी अच्छी लगी
फूल क्या सारा चमन नज़रों से मेरी गिर गया
इक हमें तैबा का कूचा और गली अच्छी लगी
बन के आये कितने रहबर उनसे पहले भी मगर
हम को सुल्ताने जहां की रहबरी अच्छी लगी
उम्मते सरकार को मौला ने बख़्शा उस घड़ी
जब सदाए *रब्बे ह़बली उम्मती* अच्छी लगी
सब तो शाहाने ज़मन शाही लिबासों में चलें
इक हबीबे किब्रिया को सादगी अच्छी लगी
मुस्कुराए ज़ुल्म सह कर और की रब से दुआ़
या नबी सब को तेरी आ़दत बड़ी अच्छी लगी
रौशनी शम्सो क़मर की भी हैं लेकिन आपके
मुस्कुराने से हुई जो रौशनी अच्छी लगी
देखते ही चेहरए अनवर को जाबिर कह उठे
चाँद से बढ़ कर नबी सूरत तेरी अच्छी लगी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

इश्के सरकारे दोआलम जब हुआ दिल में मेरे
फिर हमारी बन्दगी वह बन्दगी अच्छी लगी

## इश्के शहे बतहा

**गुलाम रब्बानी नश्तर**

इस्लाम पे मरने को कहा कौन करेगा
अल्लाह के वादे को वफ़ा कौन करेगा
सरकार की उलफ़त में जियेंगे भी मरेंगे
दो मुझको सज़ा मेरी सज़ा कौन करेगा
हैं मालिके कौनैन मगर फ़र्श नशीं हैं
ऐसा मेरे आक़ा के सिवा कौन करेगा
बस रब को ही मालूम है जब उनकी हक़ीक़त
फिर रब के सिवा उनकी सना कौन करेगा
सिद्दीक़ो उमर हैदरो उसमान की तरह
हक़ आप की उलफ़त का अदा कौन करेगा
हर लफ़्ज़ में हो नअ्त के इश्के शहे बतहा
इस तरह भला मिस्ले रज़ा कौन करेगा
नश्तर है तुम्हारा मेरे आक़ा मेरी सुन लो
गर तुम न सुनोगे तो सुना कौन करेगा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# रौज़ए मुस्तफ़ा

**.गुलाम रब्बानी नश्तर**

रौज़ए मुस्तफ़ा पे फ़रिश्ते अपने सर को झुकाने चले हैं
छोड़कर अर्शे आज़म को अब वह घर ज़मीं पर बसाने चले हैं
हश्र में देख कर मुस्तफ़ा को सब कहेंगे कि ख़ुश हैं चलो अब
अपने दामन में वह आसियों को देखो देखो छुपाने चले हैं
मेरे सरकार मेअ्राज की शब अर्शे आज़म पे मेहमान बन के
हम गुनहगार हम आसियों को बाख़ुदा बख़्शवाने चले हैं
जान दी हज़रते हन्ज़ला ने देखिये इनका कितना है रुतबा
आसमां पर फ़रिश्ते उठा कर .ग़ुस्ल उनको दिलाने चले हैं
बाद मरने के कोई भी मेरा न दिया साथ मेरी लहद में
बाप मां दोस्त भाई बहन सब मुझको तन्हा लेटाने चले हैं
जिस घड़ी नअ्त मैंने पढ़ी है अर्श पे धूम मचने लगी है
ऐ फ़रिश्तो चलो उनका नश्तर नअ्त उनकी सुनाने चले हैं

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# आरज़ूए मदीना

अन्जुम

हम भी मदीना जायेंगे आज नहीं तो कल ज़रूर
आक़ा हमें बुलायेंगे आज नहीं तो कल ज़रूर
दिल मेरा बेक़रार है ग़म दिल पे बेशुमार है
रन्जो अलम बतायेंगे आज नहीं तो कल ज़रूर
दुनिया ने जो भी ग़म दिया हमने ख़ुशी से सह लिया
आक़ा को हम सुनायेंगे आज नहीं तो कल ज़रूर
जो कुछ भी मांगना है वह आक़ा से मांग लेंगे हम
मांगी मुराद पायेंगे आज नहीं तो कल ज़रूर
दर पे किसी के जायें क्यों दस्ते तलब बढ़ायें क्यों
सब कुछ नबी से पायेंगे आज नहीं तो कल ज़रूर
दौलत नहीं कि जा सकूं दर्दे जिगर दिखा सकूं
लेकिन हुज़ूर आयेंगे आज नहीं तो कल ज़रूर
आक़ा हमें बुलायेंगे अन्जुम मदीना जायेंगे
नअ़त उन्हें सुनायेंगे आज नहीं तो कल ज़रूर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# मज़हरे ज़ाते ख़ुदा

**अन्जुम कमाली**

मेरे मुस्तफ़ा का हमसर न हुआ न है न होगा
कोई आप जैसा रहबर न हुआ न है न होगा
वह हबीब हैं ख़ुदा के वह तबीब दो जहां के
कोई आप सा पयम्बर न हुआ न है न होगा
वह ख़ुदा के राज़दाँ हैं वह शफ़ीऐ आसियां हैं
कोई रब का ऐसा दिलबर न हुआ न है न होगा
यह नबी का आस्ताँ है जहां ख़म सरे जहां है
दो जहां में ऐसा तो दर न हुआ न है न होगा
यही बोले सिदरा वाले दो जहां को छान डाले
तेरा मिस्ल मेरे सरवर न हुआ न है न होगा
है जहां जहां ख़ुदाई वहां उनकी मुस्तफ़ाई
कि ख़ुदा का ऐसा मज़हर न हुआ न है न होगा
मैं हूं अन्जुम कमाली मेरे आक़ा बे मिसाली
कि मेरे नबी से बेहतर न हुआ न है न होगा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# कांटा भी फूल है

**मौलाना कौसर नियाज़ी**

नाज़ाँ है जिस पे हुस्न वह हुस्ने रसूल है
यह कहकशाँ तो आपके क़दमों की धूल है
ऐ रह रवाने शौक़ यहां सर के बल चलो
तैबा के रास्ते का तो कांटा भी फूल है
हर इक क़दम पे इस में ज़रूरी है एहतियात
इश्क़े बुताँ नहीं है यह इश्क़े रसूल है
ज़ाहिद ख़्याल पैरवीए मुस्तफ़ा रहे
फिर इसके बाद तेरी इबादत क़बूल है
मेम्बर हो या कि दार न जाएगी यादे यार
ऐ दिल यह अहले इश्क़े वफ़ा का उसूल है
बातिल के सामने न झुकाऊँगा सर कभी
मेरी नज़र में उसवए इब्ने बतूल है
उस पर नुज़ूले रहमते परवरदिगार हो
कौसर फ़िराक़े दोस्त में जो दिल मलूल है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# शाहे ज़मनी

**शहबाज़ लखनवी**

हम को तैबा में बुला लो शाहे ज़मनी
दिल की हसरत यह निकालो शाहे ज़मनी
शाहे ज़मनी मौला मक्की मदनी
हम को तैबा में बुला लो शाहे ज़मनी

नगर नगर और डगर डगर फिरता हूं मारा मारा
मुझ दुखिया का इस दुनिया में कोई नहीं सहारा
तुम ही सीने से लगा लो शाहे ज़मनी
हम को तैबा में बुला लो शाहे ज़मनी

जो भी पहुंचा तुमरे दर पर लौटा कभी न ख़ाली
हर मंगते की झोली तुम ने रहमत से भर डाली
तुम हो ऐसे ही दयालू शाहे ज़मनी
हम को तैबा में बुला लो शाहे ज़मनी

हरियाले गुम्बद का मन्ज़र जन्नत से भी प्यारा
कअ़बे का कअ़बा रौज़ा है प्यारे नबी तुम्हारा
जाली रौज़े की दिखा दो शाहे ज़मनी
हम को तैबा में बुला लो शाहे ज़मनी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

दुआ करो सब मिलकर कि शहबाज़ मदीना जाये
जाकर यह दरबारे नबी में अपने सीस नवाए
कहना क़दमों में सुला लो शाहे ज़मनी
हम को तैबा में बुला लो शाहे ज़मनी

## सुबहानल्लाह सुबहानल्लाह

**मौलाना कौसर नियाज़ी**

हैं उसके सना ख़्वाँ अर्ज़ो समाँ सुबहानल्लाह सुबहानल्लाह
पढ़ता है ख़ुदा ख़ुद सल्ले अला सुबहानल्लाह सुबहानल्लाह
है सबसे मुक़द्दस बादे ख़ुदा वह रहमते आलम क्या कहना
उस सा न कोई होगा न हुआ सुबहानल्लाह सुबहानल्लाह
ख़ालिक़ ने कहा है अब्द उसे इस रम्ज़ को कोई क्या समझे
बे मिस्ल है वह महबूबे ख़ुदा सुबहानल्लाह सुबहानल्लाह
यह शम्सो क़मर यह बर्गो शजर क्या हूरो मलाइक जिन्नो बशर
पढ़ते हैं सभी उसका कलिमा सुबहानल्लाह सुबहानल्लाह
वह मज़हरे नूरे ख़ुदा ठहरा लौलाक लमा ख़ुद हक़ ने कहा
है रोज़े अज़ल से नूर उसका सुबहानल्लाह सुबहानल्लाह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# ताजदारे हरम

ताजदारे हरम हो निगाहे करम हम ग़रीबों के दिन भी संवर जायेंगे

हादीए बेकसाँ क्या कहेगा जहां आपके दर से ख़ाली अगर जायेंगे

ख़ौफ़े तूफ़ां कहीं आंधियों का है ग़म सख़्त मुश्किल है आक़ा कहां जायें हम

आप भी गर न लेंगे हमारी ख़बर हम मुसीबत के मारे किधर जायेंगे

दर पे साक़ीए कौसर के पीने चलें मैकशो आओ आओ मदीने चलें

याद रखो अगर उठ गई वह नज़र जितने ख़ाली हैं सब जाम भर जायेंगे

कोई अपना नहीं ग़म के मारे हैं हम आपके दर पे फ़रियाद लाये हैं हम

हो निगाहे करम वरना चौखट पे हम आपका नाम ले ले के मर जायेंगे

आपके दर से कोई न ख़ाली गया अपने दामन को भर कर सवाली गया

हो पयामे हज़ीं पर भी आक़ा करम वरना औराक़े हस्ती बिखर जायेंगे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# लुत्फ़े ज़िन्दगी

अज़ : हामिद लखनवी

जो यादे मुस्तफ़ा से दिल को बहलाया नहीं करते
हक़ीक़त में वो लुतफ़े ज़िन्दगी पाया नहीं करते
ज़बां पर शिकवए रंजो अलम लाया नहीं करते
नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते
यह दरबारे मुहम्मद है यहां मिलता है बिन मांगे
अरे नादां यहां दामन को फैलाया नहीं करते
सजाले दिल की दुनिया दाग़हाए इश्क़े अहमद से
यह ऐसे फूल हैं जो खिल के मुरझाया नहीं करते
अगर बू–जहल बहरे इम्तेहां आये तो आने दो
रसूलुल्लाह इन बातों से घबराया नहीं करते
जगह पाई है क़िस्मत से जिन्होंने कूए तैबा में
वोह ज़र्रे चाँद–तारों से भी शरमाया नहीं करते
यह है दरबार आक़ा का यहां अपनों का क्या कहना
यहां से हाथ ख़ाली ग़ैर भी जाया नहीं करते
अरे ओ ना–समझ क़ुरबान होजा इनके रौज़े पर
यह लमहे ज़िन्दगी में बार–बार आया नहीं करते

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

हबीबे किब्रिया की शाने रहमत तो ज़रा देखो
सितम सहते तो हैं लेकिन सितम ढाया नहीं करते
मज़ा मिलता है जिनको सरवरे कौनैन के ग़म में
वोह अपनी दास्ताने ग़म को दुहराया नहीं करते
जो उनके दामने रहमत से वाबस्ता हैं ऐ **हामिद**
किसी के सामने वोह हाथ फैलाया नहीं करते

## झुले झुले

झुले झुले प्यारे मुहम्मद नूर के झूले में झुले
दाई हलीमा झूला झुलायें रहमते आलम बन करझुले
उनका झूला रहमत वाला अ़र्श से आला फ़र्श से बाला
कहता है यह झुलाने वाला नूर के पैकर झुले
आक़ा के सब नाज़ उठायें सदक़े जायें वारी जायें
हूरो मलाइक झूम के गायें ख़िज़्र के रहबर झुले
अ़र्शे उला पर जाने वाले राज़ ख़ुदा का पाने वाले
रब का जलवा देखने वाले साक़ीए कौसर झुले
बेकस व बेबस के वह मुहसिन दोजहां के हैं वह मुहसिन
ग़ैब से आई सदा यह मुहसिन शाफ़ेअ़ महशर झुले

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# ला इलाह की बोल

ला इलाह की बोली बोल इल्लल्लाह से गिरह खोल, अल्लाहु से कल्ब जगाए जा
सदा रहती न जवानी यह दुनिया तो फानी सारी दुनिया को कलिमा पढ़ाए जा
याद कर ओ गाफिल तू किस काम के लिए आया था सोच तो जरा तुझे रब ने क्यों बनाया था
तू है रब का खलीफा तेरा चमका है नसीबा कर जिक्र उसका वादा निभाए जा
दुनिया के धन्दे छोड़ रब से तू नाते जोड़ होंटों पर अल्लाह अल्लाह दिल में छुपा है चोर
ऐसी बातें नहीं कर सुन जरा ओ बे खबर सच बात ही तू सबको सुनाए जा
सुन्नते रसूल है खुदा का भी फरमान है कलिमए तय्यब पे जान भी कुरबान है
है दुआ वक्ते नजअ् मेहरबा हों मुस्तफा उस दर पे तू सर झुकाए जा
अल्लाह ने गवाही दी प्यारे नबी की नबियों में शान नहीं और किसी की
खुद यह कहता है खुदा वह है सबका पेशवा सल्ले अला का नगमा सुनाए जा
आधा किलो जौं, एक बकरी जबह की साथ में नबी के सारी फौज खाने आई थी
हुए जाबिर हैरान किया आका ने फरमान खाना खत्म न होगा सबको खिलाए जा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# मदीने की गली

**नियाज़ी**

ख़ुसरवी अच्छी लगी न सरवरी अच्छी लगी
हम फ़क़ीरों को मदीने की गली अच्छी लगी
दूर थे तो ज़िन्दगी बे रंग थी बे कैफ़ थी
उनके कूचे में गये तो ज़िन्दगी अच्छी लगी
मैं न जाऊँगा कहीं भी दर नबी का छोड़ कर
मुझको कूए मुस्तफ़ा की चाकरी अच्छी लगी
वालिहाना हो गये जो तेरे क़दमों पर निसार
हक़ तआला को अदा उनकी बड़ी अच्छी लगी
नाज़ कर तू ऐ हलीमा सरवरे कौनैन पर
गर लगी अच्छी तो तेरी झोंपड़ी अच्छी लगी
रख दिये सरकार के क़दमों पे सुल्तानों ने सर
सरवरे कौनो मकाँ की सादगी अच्छी लगी
आज महफ़िल में नियाज़ी नअ़त जो मैंने पढ़ी
आशिक़ाने मुस्तफ़ा को वह बड़ी अच्छी लगी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# मुहम्मद के शहर में

राज़ इलाहाबादी

क्यों आके रो रहा है मुहम्मद के शहर में
हर दर्द की दवा है मुहम्मद के शहर में

क़दमों ने उनके ख़ाक को कुन्दन बना दिया
मिट्टी भी कीमिया है मुहम्मद के शहर में

सदक़ा लुटा रहा है ख़ुदा उनके नाम का
सोना निकल रहा है मुहम्मद के शहर में

सब तो झुके हैं ख़ानए कअ़बा के सामने
कअ़बा झुका हुआ है मुहम्मद के शहर में

ऐ मौत अभी आके गले से लगा मुझे
मरना मैं चाहता हूं मुहम्मद के शहर में

ऐ *राज़* गरचे हिन्द में मौजूद हूं मगर
दिल नअ़त पढ़ रहा है मुहम्मद के शहर में

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# नबी नबी

चमन चमन की दिलकशी गुलों की है वह ताज़गी
है चांद जिनसे शबनमी वह कहकशां की रौशनी
फ़ज़ाओं की वह रागनी हवाओं की वह नग़मगी
है कितना प्यारा नाम भी नबी नबी नबी नबी

वह आमद बहारे है, वह नूर की क़तार है
फ़ज़ा भी ख़ुशगवार है, हवा भी मुश्कबार है
हवा से मैंने जब कहा यह कौन आ गया बता
हवा पुकारती चली नबी नबी नबी नबी

ज़मीं बने ज़मां बने मकीं बने मकां बने
चुनीं बने चुनां बने वह वजहे कुन फ़कां बने
कहा ये मैंने ऐ ख़ुदा ये किस के सदक़े में बना
तो रब ने भी कहा यही नबी नबी नबी नबी

वह हुस्ने इन्तेख़ाब है वह इश्क़ लाजवाब है
वह रहमतों के बाब है वह नूर के सहाब है
वह जिस तरफ़ निकल गये फ़ज़ा में फूल खिल गये
कली कली पुकार उठी नबी नबी नबी नबी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

जमालियात आप से तजाल्लियात आप से
तख़य्युलात आपसे तसर्रुफ़ात आप से
बस एक निगाहे मुस्तफ़ा से क़िबला भी दहल गया
ख़मीदा सर है ख़ुसरवी नबी नबी नबी नबी
चले जो क़त्ल को उमर कहा किसी ने रोक कर
कहां चले हो और किधर मिज़ाज क्यों है अर्श पर
ज़रा बहन की लो ख़बर फ़िदा है वह रसूल पर
वह कह रही है हर घड़ी नबी नबी नबी नबी
उमर चले बहन के घर यह दिल में सोच सोच कर
उड़ायेंगे हम उनका सर जो हैं नबी के दीन पर
सुना है जब क़ुरआन को ख़ुदा के उस बयान को
उमर ने भी कहा यही नबी नबी नबी नबी
रज़ा का यह पयाम है वज़ीफ़ए तमाम है
वही तो नेक नाम है नबी का जो ग़ुलाम है
जो आशिक़े नबी हुआ ख़ुदा का वह वली हुआ
वही हुआ है जन्नती नबी नबी नबी नबी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# क़ब्र की रौशनी

सामने सीरते मुस्तफ़ा दर्स है रहबरी के लिए
फिर हमें और क्या चाहिए दोस्तो ज़िन्दगी के लिए

कर यक़ीं तू मेरी बात पर कैसा होगा अंधेरा वह घर
आ ही जायेंगे ख़ैरुल बशर क़ब्र में रौशनी के लिए

हश्र में हम कहां तुम कहां जब न होगा कोई मेहरबाँ
बन के रहमत हुज़ूर आयेंगे अपने हर उम्मती के लिए

हाथ आने को कुछ भी नहीं बस मिलेगी तो दो गज़ ज़मीं
जाने फिर क्यों परेशान है आदमी आदमी के लिए

## क़तअ़

दरबारे मुस्तफ़ा का क़रीना कुछ और है
मरना यहां का और है जीना कुछ और है

कअ़बा ख़ुदा का घर है रियाज़े ख़लील भी
लेकिन ख़ुदा गवाह मदीना कुछ और है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# रहमतों का ख़ज़ाना

उनकी अज़मत का क्या ठिकाना है
जिनके ज़ेरे क़दम ज़माना है

मांगने से सिवा ही पाओगे
रहमतों का वही ख़ज़ाना है

ग़म के मारो चलो मदीना चलें
वह जो आक़ा का आस्ताना है

हम ज़मीं पर गुनाहगार सही
सर पे रहमत का शामियाना है

सीरते मुस्तफ़ा पढ़ो माजिद
इल्म का इक यही ख़ज़ाना है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# मांग अरे मांग

नियाज़ी

रहमत का है दरवाज़ा खुला मांग अरे मांग
देता है करम उनका सदा मांग अरे मांग

भर जाएगा कश्कोल मुरादों का तेरा भी
बन कर मेरे आक़ा का गदा मांग अरे मांग

आजाएगा इक रोज़ भी तैबा से बुलावा
हर वक़्त मदीने की दुआ़ मांग अरे मांग

मायूस न हो यह मेरे लजपाल का दर है
है किस लिए ख़ामोश खड़ा मांग अरे मांग

सरकार को सरकार से मांगेंगे नियाज़ी
सरकार ने जिस वक़्त कहा मांग अरे मांग

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# या रसूलल्लाह

## मौलाना मक़सूद आलम रज़वी सीवानी

घटा ज़ुल्मत की छाई है हटा दो या रसूलल्लाह
मेरी हस्ती को ताबिन्दा बना दो या रसूलल्लाह

पड़ी है कश्तीए उम्मत भंवर में तेज़ तूफ़ां है
किनारे से ज़रा इस को लगा दो या रसूलल्लाह

तड़पता हूं मैं मुद्दत से तुम्हारी दीद को आक़ा
मुझे दीदार का शरबत पिला दो या रसूलल्लाह

ज़माना दर–पै आज़ार है जाऊँ कहां आक़ा
ग़मो आलाम के बादल हटा दो या रसूलल्लाह

तुम्हीं हो सरवरे आलम तुम्हीं हो रहमते आलम
मेरी ख़्वाबीदा क़िस्मत को जगादो या रसूलल्लाह

तुम्हारा संगे दर मक़सूदे आलम है शहे बतहा
इसी दर पर हमें थोड़ी जगह दो या रसूलल्लाह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# चल चल मदीने चल

**तबस्सुम अ़ज़ीज़ी**

चल चल चल मदीने जल्दी चल
दिल से यही आवाज़ आती है हर लम्हा हर पल
चल चल चल मदीने जल्दी चल

सरवरेआलम नूरे मुजस्सम हम पे करम फ़रमायेंगे
हमको यक़ीं है अपने रौज़ा पर आक़ा बुलवायेंगे
हम भी मदीने को जायेंगे आज नहीं तो कल
चल चल चल मदीने जल्दी चल

अपनी अपनी क़िस्मत है ये अपना अपना नसीबा है
कोई तरस्ता है कोई हर साल मदीना जाता है
कोई हवाई जहाज़ से जाता है कोई पैदल
चल चल चल मदीने जल्दी चल

ग़म के मारो आओ चलें महबूबे ख़ुदा के रौज़े पर
दिल की मुरादें मिलती हैं महबूबे ख़ुदा के रौज़े पर
मेरे नबी फ़रमा देते हैं हर मुश्किल को हल
चल चल चल मदीने जल्दी चल

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

जिसके दिल में इश्के नबी है उसपे खुदा की रहमत है
जो भी है मद्दाह नबी का वह हक़दारे जन्नत है
चाहे तबस्सुम अज़ीज़ी हो या बेकल या अजमल
चल चल चल मदीने जल्दी चल

# मुज़्दए जाँफ़ज़ा

## हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म हिन्द

रुसुल उन्हीं का तो मुज़्दा सुनाने आये हैं
उन्हीं के आने की ख़ुशियां मनाने आये हैं
फ़रिश्ते आज जो धूमें मचाने आये हैं
उन्हीं के आने की शादी रचाने आये हैं
फ़लक से हूरो मलक गीत गाने आये हैं
कि दोजहां में यह डंके बजाने आये हैं
यह सीधा रास्ता हक़ का बताने आये हैं
ये हक़ के बन्दों को हक़ से मिलाने आये हैं
यह भूले बिछड़ों को रस्ते पे लाने आये हैं
यह भूले भटकों को हादी बनाने आये हैं

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

चमक से अपनी जहां जगमगाने आये हैं
महक से अपनी यह कूचे बसाने आये हैं
नसीमे फ़ैज़ से ग़ुन्चे खिलाने आये हैं
करम की अपनी बहारें दिखाने आये हैं
यही तो सोते हुओं को जगाने आये हैं
यही तो रोते हुओं को हंसाने आये हैं
उन्हें ख़ुदा ने किया अपने मिल्क का मालिक
उन्हीं के क़ब्ज़े में रब के ख़ज़ाने आये हैं
जो चाहेंगे जिसे चाहेंगे वह उसे देंगे
करीम हैं यह ख़ज़ाने लुटाने आये हैं
किताबे हज़रते मूसा में वस्फ़ हैं उनके
किताबे ईसा में उनके फ़साने आये हैं
उन्हीं की नअ्त के नग़मे ज़बूर से सुन लो
ज़बाने क़ुरआँ पे उनके तराने आये हैं
सभी रुसुल ने कहा *इज़ हबू इला ग़ैरी*
अना लहा का यह मुज़्दा सुनाने आये हैं
नसीब तेरा चमक उठा देख तो नूरी
अ़रब के चांद लहद के सिरहाने आये हैं

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# दर्दे बिस्मिल

## मौलाना हसन रज़ा ख़ान बरैलवी अ़लैहिर्रहमा

दिल दर्द से बिस्मिल की तरह लोट रहा हो
सीना पे तसल्ली को तेरा हाथ धरा हो

गर वक़्ते अजल सर तेरी चौखट पे झुका हो
जितनी हो क़ज़ा एक ही सज्दा में अदा हो

मौक़ूफ़ नहीं सुबहे क़ियामत ही पे ये अ़र्ज़
जब आंख खुले सामने तू जलवा नुमा हो

दे उसको दमे नज़अ़ अगर हूर भी सागर
मुंह फेर ले जो तिशनए दीदार तेरा हो

देखा उन्हें महशर में तो रहमत ने पुकारा
आज़ाद है जो आपके दामन से बंधा हो

क्यों अपनी गली में वह रवादारे सदा हो
जो भीक लिये राहे गदा देख रहा हो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

आता है फ़क़ीरों पे उन्हें प्यार कुछ ऐसा
खुद भीक दें और खुद कहीं मंगता का भला हो

मंगता तो है मंगता कोई शाहों में दिखा दे
जिसको मेरे सरकार से टुकड़ा न मिला हो

मिट्टी न हो बरबाद पसे मर्ग इलाही
जब ख़ाक उड़े मेरी मदीना की हवा हो

ढूंडा ही करें सदरे क़ियामत के सिपाही
वह किसको मिले जो तेरे दामन में छुपा हो

अल्लाह यूं ही उम्र गुज़र जाये गदा की
सर ख़म हो दरे पाक पे और हाथ उठा हो

शाबाश हसन और चमकती सी ग़ज़ल पढ़
दिल खोल कर आईनए ईमाँ की जिला हो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# दामने करम

हुज़ूर अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी

तेरे दामने करम में जिसे नींद आगई है
जो फ़ना न होगी ऐसी उसे ज़िन्दगी मिली है
मुझे क्या पड़ी किसी से करूं अर्ज़े मुद्दआ मैं
मेरी लौ तो बस उन्हीं के दरे जूद से लगी है
वह जहान भर के दाता मुझे फेर देंगे ख़ाली
मेरी तौबा ऐ ख़ुदा यह मेरे नफ़्स की बदी है
मैं मरूं तो मेरे मौला यह मलाइका से कह दे
कोई इसको मत जगाना अभी आंख लग गई है
मैं गुनाहगार हूं और बड़े मर्तबों की ख़्वाहिश
तू मगर करीम है जो तेरी बन्दा परवरी है
तेरी याद थपकी देकर मुझे अब शहा सुला दे
मुझे जागते हुए यूं बड़ी देर होगई है
तेरा दिल शिकस्ता अख़्तर इसी इन्तेज़ार में है
कि अभी नवेदे वसलत तेरे दर से आ रही है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# मीलादे नूर

कौन शहरे मक्का में सुबह सुबह आया है
जिसके नूर से आलम सारा जगमगाया है
गै़ब से निदा आई आमिना मुबारक हो
तूने रहमते हक़ से नूरे हक़ को पाया है
*इन्नमा अना बशरुम् मिस्लुकुम्* के पंर्दे में
हक़ ने अपने जलवों का आईना सजाया है
अक़्ल सब की हैराँ है देख कर शहे दीं को
यह बशर तो हैं लेकिन क्यों न इनका साया है
थी निदा शबे असरा उदनु मिन्नी ऐ महबूब
बेधड़क चले आओ हमने ही बुलाया है
या नबी मैं तुम पर क्यों न जानो दिल फ़िदा करदूं
हमने आपको पाकर तो ख़ुदा को पाया है
दामने नबी आशिक़ अब न हम से छूटेगा
हमने उन से जो मांगा वह ख़ुदा से पाया है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# मैं मदीने चला

मैं मदीने चला मैं मदीने चला
फिर करम हो गया मैं मदीने चला

कैफ़ सा छा गया मैं मदीने चला
झूमता झूमता मैं मदीने चला

साक़िया मय पिला मैं मदीने चला
मस्तो बेख़ुद बना मैं मदीने चला

ऐ शजर ऐ हजर तुम भी शम्सो क़मर
देखो देखो ज़रा मैं मदीने चला

क्या बताऊँ मिली दिल को कैसी ख़ुशी
जब यह मुज़्दा सुना मैं मदीने चला

मुस्कुराने लगी दिल की हर एक कली
गुन्चए दिल खिला मैं मदीने चला

फिर इजाज़त मिली जब ख़बर ये सुनी
दिल मेरा झूम उठा मैं मदीने चला

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

जो हैं महबूबे रब अपनी उन से ही सब
बख़्शवाने ख़ता मैं मदीने चला

ऐ सिद्दीक़ो उमर हो सलाम आप पर
और रहमत सदा मैं मदीने चला

वह उहद की ज़मीं जिसके अन्दर मकीं
मेरे हमज़ा पिया मैं मदीने चला

रूहे मुज़तर ठहर तू निकल न इधर
इतनी जल्दी है क्या मैं मदीने चला

हाथ उठते रहे मुझको देते रहे
वह तलब के सिवा मैं मदीने चला

मेरे आक़ा का दर होगा पेशे नज़र
चाहिये और क्या मैं मदीने चला

सब्ज़ गुम्बद का नूर ज़ंग कर देगा दूर
पाएगा दिल जिला मैं मदीने चला

गुम्बदे सब्ज़ पर जब पड़ेगी नज़र
क्या सुरूर आएगा मैं मदीने चला

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

उनके मीनार पर जब पड़ेगी नज़र
क्या सुरूर आएगा मैं मदीने चला

अम्बरे नूर पर जब पड़ेगी नज़र
क्या सुरूर आएगा मैं मदीने चला

कैफ़ो मस्ती अ़ता मुझको कर दे ख़ुदा
मांगता यह दुआ़ मैं मदीने चला

मेरे गन्दे क़दम और उनका करम
लाज रखना ख़ुदा मैं मदीने चला

दर्दे उल्फ़त मिले ज़ौक़ बढ़ता रहे
जब चले क़ाफ़िला मैं मदीने चला

उनका ग़म चश्मे तर और सोज़े जिगर
अब तो दे दे ख़ुदा मैं मदीने चला

क्या करेगा इधर बांध रख़्ते सफ़र
चल उबैदे रज़ा मैं मदीने चला

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# शजरा

## आलिया क़ादिरिया बरकातिया रज़विया नूरिया

या इलाही रहम फ़रमा मुस्तफ़ा के वास्ते
या रसूलल्लाह करम कीजे ख़ुदा के वास्ते

मुश्किलें हल कर शहे मुश्किल–कुशा के वास्ते
कर बलायें रद शहीदे करबला के वास्ते

सय्यदे सज्जाद के सदक़े में साजिद रख मुझे
इल्मे हक़ दे बाक़िरे इल्मे हुदा के वास्ते

सिद्क़े सादिक़ का तसद्दुक़ सादिक़ुल इस्लाम कर
बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वास्ते

बहरे मअ़रूफ़ो सिरी मअ़रूफ़ दे बेख़ुद सरी
जुन्दे हक़ में गिन जुनैदे बा–सफ़ा के वास्ते

बहरे शिब्ली शेरे हक़ दुनिया के कुत्तों से बचा
एक का रख अ़ब्दे वाहिद बे–रिया के वास्ते

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

बुल्फ़रह का सदक़ा कर ग़म को फ़रह दे हुस्नो सअ़द
बुल्हसन और बू सईदे सअ़द–ज़ा के वास्ते

क़ादिरी कर क़ादिरी रख, क़ादिरियों में उठा
क़द्रे अ़ब्दुल क़ादिरे क़ुदरत नुमा के वास्ते

नस्र अबी सालेह का सद्क़ा सालेहो मन्सूर रख
दे हयाते दीं मुहिय्ये जाँ फ़िज़ा के वास्ते

तूरे इरफ़ानो उ़लूवो हम्दो हुस्नाबो बहा
दे अ़ली, मूसा, हसन, अह़मद बहा के वास्ते

बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी बादशा के वास्ते

ख़ानए दिल को ज़िया दे रूए ईमाँ को जमाल
शह ज़िया मौला जमालुल औलिया के वास्ते

दे मुह़म्मद के लिए रोज़ी कर, अहमद के लिए
ख़्वाने फ़ज़्लुल्लाह से हिस्सा गदा के वास्ते

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

दीनो दुनिया की मुझे बरकात दे बरकात से
इश्क़े हक़ दे इश्क़ी इश्क़े इन्तिमा के वास्ते

हुब्बे अहले बैत दे आले मुहम्मद के लिए
कर शहीदे इश्क़े हम्ज़ा पेशवा के वास्ते

दिल को अच्छा तन को सुथरा जानको पुरनूर कर
अच्छे प्यारे शम्से दीं बदरुलओ़ला के वास्ते

दो जहां में ख़ादिमे आले रसूलिल्लाह कर
हज़रते आले रसूले मुक़्तदा के वास्ते

कर अ़ता अहमद रज़ाए अहमदे मुरसल मुझे
मेरे मौला हज़रते अहमद रज़ा के वास्ते

सदक़ा इन अअ़्याँ का दे छः ऐन इज़्ज़ इल्मो अ़मल
अ़फ़्वो इरफ़ाँ आफ़ियत अहमद रज़ा के वास्ते

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# लाखों सलाम

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शम्‌अ़े बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

मेहरे चर्ख़े नबुव्वत पे रौशन दुरूद
गुले बाग़े रिसालत पे लाखों सलाम

शहर–यारे इरम ताजदारे हरम
नौ बहारे शफ़ाअ़त पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सर्वत पे लाखों सलाम

दूरो नज़दीक के सुनने वाले वो कान
काने लअ़्ले करामत पे लाखों सलाम

जिसके माथे शफ़ाअ़त का सेहरा रहा
उस जबीने सआ़दत पे लाखों सलाम

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आगया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

पतली पतली गुले .कुद्स की पत्तियाँ
उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम

वो ज़बाँ जिसको सब कुन की कुंजी कहें
उसकी नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

कुल जहाँ मिल्क और जौ की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअत पे लाखों सलाम

जिस सुहानी घड़ी चम्का तैबा का चाँद
उस दिल अफ़्रोज़ साअत पे लाखों सलाम

काश महूशर में जब उनकी आमद हो और
भेजें सब उनकी शौकत पे लाखों सलाम

एक मेरा ही रहूमत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम

मुझसे ख़िद्मत के .कुदसी कहें हां रज़ा
मुस्तफ़ा जाने रहूमत पे लाखों सलाम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# हमारी हिन्दी मतबूआत

| | | |
|---|---|---|
| 1. | सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर | मुफ़्ती ख़लील अहमद बरकाती |
| 2. | जन्नती ज़ेवर | मौलाना अब्दुलमुस्तफ़ा आज़मी |
| 3. | निज़ामे शरीअ़त | अल्लामा गुलाम जीलानी मेरठी |
| 4. | सवानेह हज़रत अवैस क़रनी | आमिर गीलानी |
| 5. | इस्लामी ज़िन्दगी | मुफ़्ती अहमद यार ख़ाँ नईमी |
| 6. | इस्लामी तालीम | अल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी |
| 7. | हु.कूक़े वालिदैन | इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी |
| 8. | मज़ारात पर औरतों की हाज़िरी | इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी |
| 9. | तम्हीदे ईमान | इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी |
| 10. | अज़ाने क़ब्र | इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी |
| 11. | बारह माह की नफ़्ल नमाज़ें | सय्यद शाह तुराबुल हक़ क़ादरी |
| 12. | सच्ची नमाज़ मअ़ नीयत नामा | अबुल कलाम अहसनुल क़ादरी |
| 13. | सच्ची नमाज़ मअ़ नीयत नामा (पॉकेट) | अबुल कलाम अहसनुल क़ादरी |
| 14. | मस्नून दुआयें (पॉकेट) | अब्दुलमुबीन नोमानी |
| 15. | ईसाले सवाब की शरई हैसियत | मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी ओकाड़वी |
| 16. | अंगूठे चूमने का मसला | मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी ओकाड़वी |
| 17. | ज़ियारते .क़ुबूर | मौलाना अब्दुल अज़ीज़ फ़तहपुरी |
| 18. | तरीक़ए फ़ातिहा मअ़ सुबूत | मौलाना इलियास क़ादरी |
| 19. | तबलीग़ी जमाअ़त का फ़रेब | सय्यद शाह तुराबुल हक़ क़ादरी |
| 20. | तबलीग़ी जमाअ़ अहादीस की रौशनी में | अल्लामा अरशदुल क़ादरी |
| 21. | बहारे शबाब | अल्लामा अब्दुल अ़लीम मेरठी |

## नअ़तिया मजमूआ

| | | |
|---|---|---|
| 1. | हदाइक़े बख़्शिश | इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी |
| 2. | इन्तेख़ाबे आला हज़रत | तरतीब अब्दुल मुबीन नोमानी |
| 3. | मौजे नूर | तरतीब मौलाना मक़सूद आलम रज़वी |
| 4. | बारिशे रहमत | हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी |
| 5. | यादगारे बदर | यूसुफ़ रज़ा क़ादरी |


राबते का पताः—

**रज़वी किताब घर**
423, मटिया महल जामा मस्जिद
दिल्ली—6 फोन : 3264524

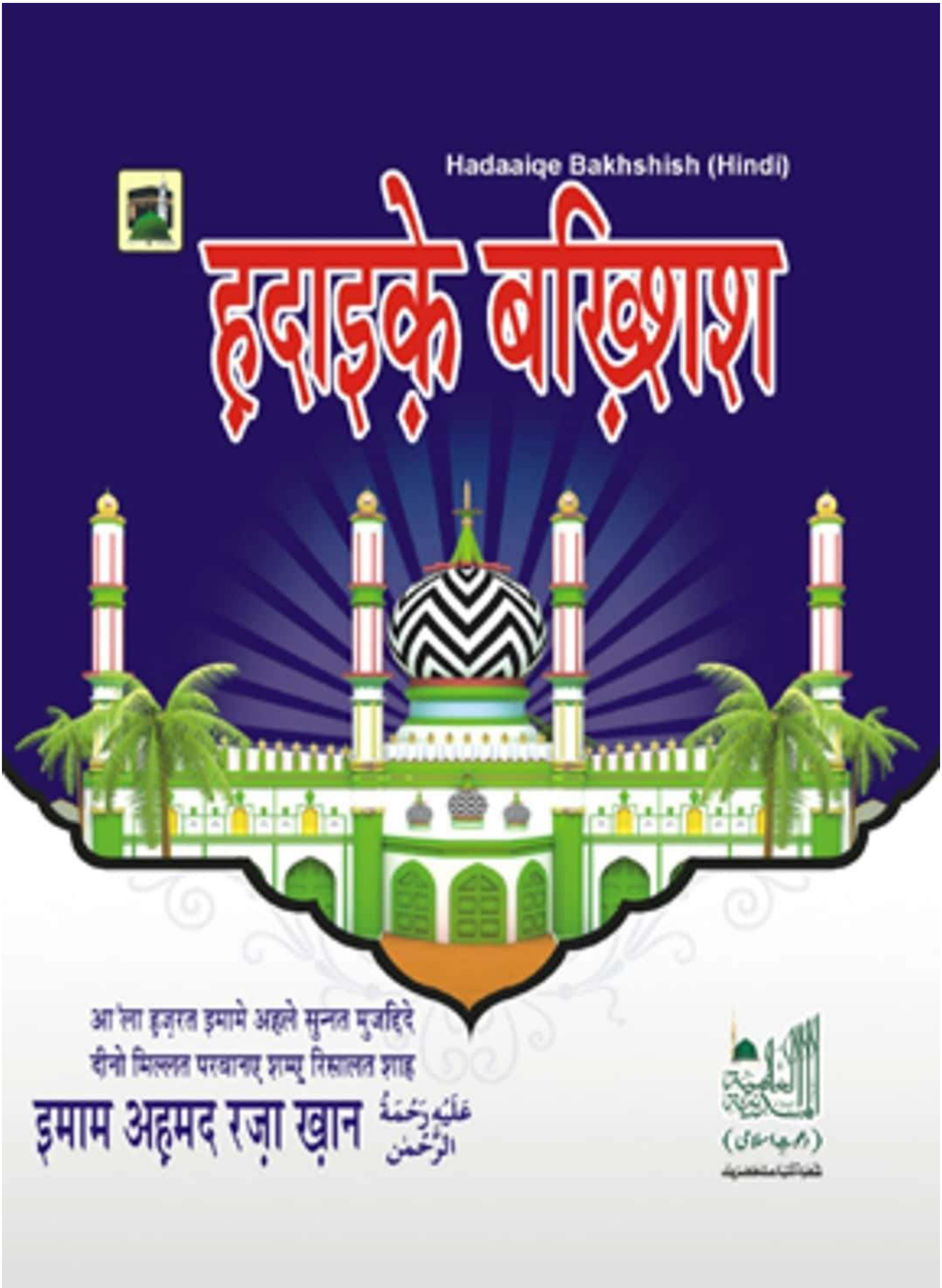
**रज़वी किताब घर**
114, गैबी नगर, भिवंडी—421302
ज़िला थाना (महाराष्ट्र) फोन : 55389

Rs:. 10/-



उबैदे ग़ौसो ख़्वाज़ रज़ा व कुल औलिया
मुहम्मद जमालुद्दीन ख़ान क़ादिरी रज़वी
ज़िलअ़ बहराइच शरीफ़ यूपी, अल-हिन्द
मोबाइल नम्बर +917860520899

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks




https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

# कलामुर - रहमान

हिन्दी में कुरआने मजीद

# कन्जुल ईमान

अरबी मत्न, अनुवाद व तफ़्सीर


उर्दू अनुवाद : अअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ
मुहद्दिसे बरैलवी रहमतुल्लाहे तआला अलैह

तफसीर : हज़रत मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब
सद्रुल अफ़ाज़िल रहमतुल्लाहे तआला अलैह

हिन्दी रूपान्तर : सैयद शाह आले रसूल हसनैन मियाँ नज़्मी
सज्जादानशीन, ख़ानक़ाहे बरकातियह,
मारेहरा शरीफ़.



प्रकाशक:

बरकाती पब्लिशर्स

मिलने के पते

फ़ारूक़िया बुक डिपो ४२२, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली–११०००६
रजा अकेडमी २६, काम्बेकर स्ट्रीट, मुंबई–४००००३


https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

1 /1088

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks